जीवन-ऊर्जा का केन्द्र

'है जैसा तैसा रहै,
कहै कबीर विचारि।'
'ज्यों तिल माहीं तेल है,
चकमक माहीं आग।'

जैसे चकमक में आग छिपी है और अगर तुम्हें चकमक न रगड़ना आता हो तो तुम बैठे रहोगे। चकमक सामने रखी रहेगी, और तुम्हारे घर में अंधेरा भरा रहेगा। और सामने रखी थी आग, लेकिन रगड़ने की कला तुम्हें न आती थी।

धर्म है समाधि, योग है रगड़ने की कला। योग है चकमक को रगड़कर आग को पैदा कर लेने की विधि। आग तो छिपी है। परमात्मा ही छिपा है सब तरफ, जैसे तेल तिल में छिपा है, जरा निचोड़ने की बात है; जैसे चकमक में आग छिपी है, जरा रगड़ने की बात है।

'तेरा साईं तुज्झ में, जागि सकै तो जाग।' कबीर कहते हैं, कहीं और जाना नहीं है। 'तेरा साईं तुज्झ में, जागि सकै तो जाग'—बस करना इतना ही है कि तू जाग। साईं को नहीं खोजना है, जागना है। और भूल कर के कहीं साईं को खोजने मत निकल जाना, बिना जागे; नहीं तो नींद में बहुत भटकोगे, पहुंचोगे कहीं नहीं। क्योंकि—'तेरा साईं तुज्झ में।' जाते कहां हो खोजने? जितनी दूर निकल जाओगे खोजने उतनी ही उलझन में पड़ जाओगे। परमात्मा को खोजना नहीं है, बस जागना है।

'तेरा साईं तुज्झ में,
जागि सकै तो जाग।'
'कस्तूरी कुंडल बसै,
मृग ढूंढै वन माहिं।'

आती है गंध कस्तूरी की भीतर से। नाफा पक गया, कस्तूरी तैयार है।

भागता है पागल होकर मृग, खोजता है, 'कहां से आती है यह गंध?' उसकी नाभि में है कस्तूरी। पर मृग को कैसे पता चले? मनुष्य को भी पता नहीं चलता कि गंध नाभि में है।

तुम्हारे जीवन का स्रोत तुम्हारी नाभि है। तुम्हारे आनंद का स्रोत भी तुम्हारी नाभि है। तुम्हारे अस्तित्व का केन्द्र तुम्हारी नाभि है। अगर तुम अपनी नाभि में उतर जाओ, तो तुमने परमात्मा का द्वार पा लिया।

पश्चिम में लोग मजाक करते हैं। पूरब के योगियों को कहते हैं, 'वे लोग जो अपने नाभि में टकटकी लगाकर देखते रहते हैं।' वहां क्या रखा है? वहीं सब कुछ रखा है।

तुम्हें शायद पता नहीं कि मां के गर्भ में तुम नाभि से ही मां से जुड़े थे। नाभि तुम्हारे जीवन का केन्द्र है। वहीं से मां की जीवन-ऊर्जा तुम्हारे जीवन में

तुम्हारे जीवन का स्रोत तुम्हारी नाभि है। तुम्हारे आनंद का स्रोत भी तुम्हारी नाभि है। तुम्हारे अस्तित्व का केन्द्र तुम्हारी नाभि है। अगर तुम अपनी नाभि में उतर जाओ, तो तुमने परमात्मा का द्वार पा लिया